पाश की कविता

कुछ सच्चाइयां

1.
आदमी के खत्म होने का फ़ैसला
वक्त नहीं करता
हालात नहीं करते
वह खुद करता है हमला और बचाव
दोनों आदमी खुद करता है।

2.
प्यार आदमी को दुनिया में
विचरने लायक बनाता है या नहीं
इतना जरूर है कि
हम प्यार के बहाने (सहारे)
दुनिया में विचर ही लेते हैं।

3.
मुक्ति का जब कोई रास्ता न मिला
मैं लिखने बैठ गया हूं
मैं लिखना चाहता हूं वृक्ष
जानते हुए
कि लिखना वृक्ष हो गया
मैं लिखना चाहता हूं पानी
'आदमी'-'आदमी' मैं लिखना चाहता हूं
किसी बच्चे का हाथ
किसी गोरी का मुख
मैं पूरे जोर से
शब्दों को फ़ेंकना चाहता हूं आदमी की ओर
यह जानते हुए भी कि आदमी को कुछ न होगा
हमें ऐसे रखवालों की जरूरत नहीं
जो हम पर अपने महलों से हकूमत करें
हम मेहनतकशों को उनके दान की जरूरत नहीं
हम आपस में ही सब फ़ैसले करेंगे।

4.
आ गए मेरे बीत चुके पलों की गवाही देनेवाले
आ गए कब्रों में से सोए हुए पलों को जगानेवाले

28.12.1971

5.
उनकी आदत है सागर से मोती चुग लाने की
उनका रोज़ का काम है, सितारों का दिल पढ़ना

29.12.1971

6.
मेरे पास चेहरा
संबोधक कोई नहीं
धरती का पागल इश्क शायद मेरा है
और तभी जान पड़ता है
मै हर चीज़ पर हवा की तरह
सरसराता हुआ गुजर जाऊंगा
सज्जनों, मेरे चले जाने के बाद भी
मेरी चिंता की बांह पकड़े रहना।

7.
हज़ारों लोग हैं
जिनके पास रोटी है
चांदनी रातें हैं, लड़कियां हैं
और 'अक्ल' है
हज़ारों लोग हैं, जिनकी जेब में
हर वक्त कलम रहती है
और हम हैं
कि कविता लिखते हैं...

-डायरी के पृष्ठों से

आखिर बंद हो ही गयी सेक्टर-7 की ईएसआई डिस्पेंसरी

फ़रीदाबाद (म.मो.) गतांक में सेक्टर 7 की जिस डिसपेंसरी के तमाशे का विवरण प्रकाशित किया गया था, वह आखिरकार बंद हो ही गयी है। आस-पास के जो श्रमिक छोटी-मोटी तकलीफ़ के लिये डिसपेंसरी का सहारा ले लेते थे वे अब इसके नये स्थान, जो कि सेक्टर 8 ईएसआई अस्पताल में है, तक जाने की बजाय किसी प्राइवेट एवं झोला-छाप की शरण लेंगे। अब केवल वे ही मरीज़ डिसपेंसरी पहुंचेगे जिन्हें अस्पताल ने रैफ़र होना होगा। यानी जो थोड़ा-बहुत गंभीर मरीज होगा । दवाइयां व रेस्ट सर्टिफ़िकेट लेने के लिये भी 3 किलोमीटर अधिक चलना पडेगा। इससे मरीज़ों को भले ही परेशानी होती रहे परन्तु डिसपेंसरी में तैनात 5-6 डॉक्टरों की तो मौज हो गयी क्योंकि अब मरीज़ों का इलाज करने की बजाय केवल उन्हें रैफ़र ही करना पड़ेगा जो कि एक-दो डॉक्टर भी बड़े मज़े से कर लेंगे बाकी ऐश मारेंगे।

दरअसल ईएसआईसी द्वारा करीब 45 वर्ष पूर्व बनाई गयी इस आलीशान बिल्डिंग को हरियाणा सरकार के अधिकारियों ने खंडर बना दिया है। राज्य सरकार को बिल्कुल मुफ़्त में मिली इस इमारत की वार्षिक मरम्मत एवं देखभाल का जिम्मा अस्पताल के एम एस (चिकित्सा अधीक्षक) का होता है। इस जिम्मेवारी को निभाने के लिये न उसे न उसकी राज्य सरकार को कुछ खर्च करना होता है। खर्च सारा ईएसआई कार्पोरेशन का होता है, एम एस की जिम्मेवारी तो केवल काम करवाने की होती है। इसके बावजूद इस शानदार बिल्डिंग का सत्यानाश कर दिया गया। हां परिसर में बने डॉक्टरों के दो घर ठीक-ठाक हालत में जरूर हैं क्योंकि ये घर डॉक्टरों की निजी जरूरत के हैं। जबकि तृतीय व चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के 8 मकान कभी किसी को रहने के लिये नहीं दिये गये तो बिल्कुल खंडर हो चुके हैं।

एमसीआई (मेडिकल कॉलेज ऑफ़ इन्डिया) के दबाव में एन एच-3 स्थित ईएसआई मेडिकल कॉलेज के लिये अर्बन हैल्थ ट्रेनिंग सेंटर (यूएचटीसी) खोलने के लिये जब डिसपेंसरी की जरूरत पड़ी तो इसकी जर्जर हालत पर ध्यान गया। एमसीआई के दबाव में अब शीघ्रातिशीघ्र डिसपेंसरी का जीर्णोद्धार तथा यूएचटीसी के लिये नई इमारत का निर्माण शुरू होने जा रहा है। लेकिन हरियाणा सरकार को इसकी कतई कोई चिंता नहीं है चिंता है तो मेडिकल कॉलेज के डीन को; वरना हरियाणा सरकार ने तो डिसपेंसरी को स्थानांतरित करके अपने कर्त्तव्य की इति श्री कर ली है।

इतना ही नहीं उक्त नवनिर्माण में सहयोग करने की अपेक्षा राज्य सरकार काम को लम्बा लटकाये रखने में अधिक राज़ी है। जानकार बताते हैं कि कछुआ चाल से चलने वाली हरियाणा सरकार ने तुर्त-फुर्त इस डिसपेंसरी को कैसे हटा दिया। उनके मुताबिक डॉक्टर अखिल महाजन, जिनकी काफ़ी 'तारीफ़' गतांक में की जा चुकी है, का इसमें पूरा योगदान है। पिछले दिनों जब वे ईएसआई हैल्थ केयर हरियाणा डॉक्टरों के प्रधान बने तो उन्होंने राज्य के श्रम मन्त्री नायाब सिंह सैनी पर पट्ट डाला था। राज्य भर के करीब 30 लाख ईएसआई कवर्ड मज़दूरों के लिये वे अधिक ठोस कार्य तो कुछ करा पाने की स्थिति में थे नहीं, हां इस डिसपेंसरी को बन्द करवाने जैसा ओछा काम जरूर कर दिखाया।

हरियाणा के करीब 30 लाख मज़दूर औसतन 10 हज़ार रुपये वार्षिक ईएसआई कार्पोरेशन को देते हैं। इसके बदले श्रम मन्त्री नायाब सिंह सैनी का महकमा ईएसआई हैल्थ केयर का बजट रो-पीट कर मात्र 125-150 करोड़ का ही बनाते है जिसे भी वे पूरा खर्च नहीं करते। सेक्टर 8 फ़रीदाबाद के 50 बिस्तर अस्पताल को 100 बिस्तर बनाने का प्रस्ताव बनाया है जबकि स्टाफ़ व अन्य सुविधायें यहां 30 बैड की भी नहीं हैं। इसी तरह पानीपत व यमुनानगर के अस्पतालों को भी 70 से 100 बैड का करने की सोच रहे है जबकि स्टाफ़ की हालत वहां भी पतली है।

चंद स्थानीय मज़दूर संगठनों के प्रयास से थोड़ा बहुत सुधार ईएसआई कार्पोरेशन जरूर कर रहा है। सेक्टर 7 की छोड़ दी गयी डिसपेंसरी को अब नये सिरे से कार्पोरेशन खुद मॉडल डिसपेंसरी के रूप में चला सकती है। इसी तरह नये उभरते औद्योगिक क्षेत्र पृथला, जहां ईएसआई कवर्ड मज़दूरों की संख्या 25-30 हज़ार हो चुकी है, में कार्पोरेशन 4 एकड़ का भूखंड लेकर 30 बिस्तरों वाली डिसपेंसरी, एक लोकल ऑफ़िस तथा मेडिकल कॉलेज का ग्रामीण हैल्थ ट्रेनिंग सेंटर बनाने जा रही है। इस सेंटर पर हर नये बनने वाले डॉक्टर को (इन्टर्नशिप) के दौरान 2 माह तक रात दिन वहीं रहना होगा। इसके लिये वहां एक हॉस्टल का निर्माण भी किया जायेगा। यदि राज्य सरकार ने थोड़ा सा भी सहयोग दिया तो यह काम इसी वर्ष चालू हो जायेगा।

शराब के फ़र्जी मुकदमे दर्ज करती है पुलिस

फ़रीदाबाद (म.मो.) थाना एनआईटी क्षेत्र में इन दिनों शराब माफ़ियों को लेकर चार्चा का विषय बना हुआ है। जिसको लेकर शराब माफ़ियों का धंधा जमकर चल रहा है। माफ़ियाओं ने अपने गोरख धंधों को लेकर थाना एनआईटी व एसीपी एनआईटी ऑफ़िस में पूरी सेटिंग कर रखी है थाना एनआईटी से मात्र आधा किलोमीटर दूरी पर बसी भगत सिंह कॉलोनी में शराब माफ़ियों द्वारा अवैध शराब जमकर बिक रही है।

वहीं दूसरी तरफ़ थाना एनआईटी के ठीक सामने बसी गांधी कॉलोनी में करीब आधा दर्जन शराब माफ़िया अपने गोरखधंधों को अंजाम दे रहे हैं। इसी तरह एन एच 5 के सी ब्लॉक, एम ब्लॉक, डी ब्लॉक, के ब्लॉक, में भी शराब माफ़ियाओं का पूरा जोर है। एनआईटी क्षेत्र के राहुल कॉलोनी में तो करीब आधा दर्जन शराब माफ़िया, शराब के साथ-साथ गांजा का धंधा भी जोरों से खुले आम कर रहे हैं।

ये काम कोई चोरी-छुपे नहीं बल्कि दिन-दहाड़े कर रहे हैं। एनआईटी पुलिस जहां इनसे अपना चुग्गा-पानी लेकर चुप है वहीं ये शराब माफ़िया सरकार को लाखों रुपये का चुना लगाकर जनता के साथ खिलवाड़ तक कर रहे है। इन शराब तस्करों को सबसे बड़ा फ़ायदा वो पुलिस अधिकारी पहुंचा रहे हैं जो कि पिछले कई वर्षों से थाना एनआईटी में तैनात हैं।

इन शराब माफ़ियाओं से दलाली लेकर तैनाती में आए पुलिस अधिकारियों को काणा कर छूट दिलवाते हैं। थाना एनआईटी में निरंतर शराब माफ़ियाओं पर मामले दर्ज होने के बावजूद पुलिस शराब माफ़ियाओं को रोकने में विफल नज़र आ रही है। एन एच 5 में कई शराब माफ़िया तो बीच सड़क पर कुर्सी लगाकर अपने धन्धों को अंजाम दे रहे हैं।

दरअसल पुलिस द्वारा शराब के मुकदमे दर्ज करने का भी एक तयशुदा ड्रामा होता है। शराब के धंधेबाज पुलिस से सांठ-गांठ करके मंत्री के अलावा थानापूर्ति के लिये मुकदमे भी खूद ही पुलिस को बैठे बिठाये दे देते हैं। इससे पुलिस का काम भी हो जाता है और शराब माफ़ियाओं का धंधा भी फलता फुलता है।

पत्रकार गौरी लंकेश की हत्या पर विरोध प्रदर्शन

फ़रीदाबाद, (इन्कलाबी मज़दूर) 8 सितम्बर को इंकलाबी मज़दूर केन्द्र, वीनस वर्कर्रस यूनियन, संघर्षशील सामाजिक कार्यकर्ता एवं फ़रीदाबाद के कर्मठ पत्रकारों ने लंकेश पत्रिका की सम्पादक गौरी लंकेश की हिन्दूफ़ासी वादियों द्वारा की गयी हत्या के खिलाफ़ प्रदर्शन कर विरोध मार्च निकाला। ''विरोध मार्च के दौरान प्रदर्शनकारी'' गौरी के हत्यारों को गिरफ़्तार करो! प्रेस की आज़ादी पर हमला नहीं सहेंगे, हिन्दूफ़ासीवाद मुर्दाबाद! आदि नारे लगा रहे थे। 5 सितम्बर की रात लगभग 8 बजे बेंगलूर की लंकेश पत्रिका के सम्पादक गौरी लंकेश की हत्या उनके ही घर में कर दी गयी थी।

इन्कलाबी मज़दूर केन्द्र के संजय मौर्या ने बताया कि श्री मति लंकेश एक साहसी निर्भिक स्वतंत्र पत्रकार थी जो आर.एस.एस. एवं अन्य कट्टर धार्मिक संगठनों द्वारा समाज में फैलाए जा रहे फेक न्यूज (झुठ) का भण्डाफोड़ अपनी लेखनी के माध्यम से लगातार करती रहती थी। उनकी हत्या प्रेस की आज़ादी की हत्या है। वीनस वर्रकर्स यूनियन के साथी वीरेन्द्र चौधरी ने कहा कि नये विचार और सच्चे सपनों को बन्दूक से नहीं मारा जा सकता है। मज़दूर मोर्चा अखबार के सम्पादक सतीश कुमार ने कहा कि आरएसएस एवं भाजपा की सरकार केन्द्र में बनी है तब से सरकार की विरोधी सोच पर लगातार हमला बोला जा रहा है और सरकार की नीतियों पर सवाल करने वाले पत्रकारों, बुद्धिजीवियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं की हत्या की जा रही है। विरोध मार्च में, श्याम बाबू, सुरेश संजय प्रजापति, मुन्ना प्रसाद, आशा मौर्या, होरीलाल, मनोज कुमार आदि ने अपने विचार रखे। विरोध मार्च बी.के. चौक से नीलम चौक तक निकाला गया। सभी प्रदर्शनकारी गौरी लंकेश के असली हत्यारों को तुरन्त गिरफ़्तार करने तथा फ़ासीवादी व नफ़रत फ़ैलाने वाले धार्मिक संगठनों पर प्रतिबंध लगाने की मांग कर रहे थे।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5,**
2. **प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,**
4. **रैंक, 45 नीलम चौक,**
5. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,**
6. **राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,**
7. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।**
8. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**
9. **स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब**